खंडः 1, अंकः 1 सितंबर 2022 DELHIN28953

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

नव–नारीवादी प्रतिमानः स्थान, सम्मान एवं स्वाभिमान

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस
वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र
(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)
दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक

सुनील कुमार चौधरी

संपादकीय मण्डल

डॉ रमेश भारद्वाज
डॉ संध्या वर्मा
डॉ महेश कौशिक
डॉ अभिषेक नाथ
डॉ आशीष कुमार शुक्ल
राम किशोर

संश्लेषण

नव–नारीवादी प्रतिमानः स्थान, सम्मान एवं स्वाभिमान

अनुक्रमिका

संपादकीय

1 नारीवाद एवं विविध आयाम – प्रकृति शर्मा 3–9

2 नारीवादी परिप्रेक्ष एवं नव–उदारवाद – डॉ राखी 10–13

3 नव–नारीवादी प्रतिमानः स्थान, सम्मान एवं स्वाभिमान – माधुरी 14–18

4 नव नारीवाद की संकल्पनाः समानता नहीं, सहयोगिता व परस्परपूरकता – सृष्टि 19–22

5 भारत में नारीवाद के बदलते आयामः चुनौतियां एवं संभावनाएं – चंद्रिका आर्य 23–29

संपादकीय

विकासशील राज्य शोध केंद्र, दिल्ली विश्वविधालय की हिन्दी मासिक पत्रिका, संश्लेषण क अंक को प्रकाशित करते हुए हमने अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। समस्त शोधार्थीयों, शिक्षार्थीयों एवं विधार्थीयों द्वारा समसामयिक विषय पर सामूहिक लेखों द्वारा शोध वास्तविकताओं के प्रकटीकरण के माध्यम से हिंदी भाषा को प्रचारित, प्रसारित एवं प्रमाणित करने की हमारी यह पहल संश्लेषण के रूप में प्रस्तुत हा रही है।

वर्तमान समय नारी अधिकार के दृष्टिकोण से संक्रमण का काल है। नारी अधिकार संबंधी जो परंपरागत विषय नारीवादी आदोंलनों का आधार थे, आज उन विषयों में व्यापकता दृष्टिगत हो रही है। सम्पूर्ण विश्व में नारी–विषयक समस्याओं एवं उनके प्रति बौद्धिक प्रतिक्रियाओं ने नारिवाद को परंपरागत आयामों से बाहर निकालकर नव–नारिवाद की परिधि में स्थापित कर दिया है। इस नव नारिवाद में भारत में तीन–तलाक के विरुद्ध तथा वर्तमान में ईरान मे हिजाब के विरुद्ध प्रतिक्रियाओं को देखा जा सकता है, जिसने इस विषय के विद्धवानों, विधार्थीयों, शिक्षार्थीयों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का ध्यान आकृष्ट किया है।

विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने "नव–नारिवाद प्रतिमानः स्थान, सम्मान एवं स्वाभिमान" विषय पर आलेख आमंत्रित किए। उत्कृष्ट लेखों को संपादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभो के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे है। ये समस्त लेख न केवल नारिवाद के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत कर रहे है अपितु 21 वीं शताब्दी के समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार संबंधी नए विकल्पों को खोजने का भी प्रयास कर रहे है।

संश्लेषण पत्रिका में आप सभी लेखकों व पाठकों द्वारा किए जाने वाले गहन लेखन एवं आपसे प्राप्त होने वाली महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं के आधार पर हम संश्लेषण को और अधिक गुणात्मक बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। आपके निरंतर सहयोग के लिए आप सभी का ह्दय से धन्यवाद।

संपादक मंडल

सोमवार, 14 नवंबर 2022

1

नारीवाद एवं विविध आयाम

प्रकृति शर्मा

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय महाविद्यालय, श्योपुर, मध्य प्रदेश

भारत में प्राचीन काल से नारी सम्मान का विशिष्ट स्थान रहा ह। भले ही नारी शारीरिक रूप से पुरुष की अपेक्षा कुछ सीमा में बंधी हुई है किंतु यह सर्वविदित तथ्य है कि ईश्वर ने समस्त मानव एक समान बनाया है इसलिए लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव ईश्वरीय एवं प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है। हमारे वैदिक साहित्य एवं पौराणिक रचनाओं में स्त्री को देवी के समतुल्य माना गया है। अनेक महान नारियों ने अपनी योग्यता एवं क्षमताओं से अपनी विशिष्टता को सिद्ध किया किया है तथापि उत्तर वैदिक काल में कुछ सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण समाज में परिवर्तन आए है जिसके कारण समाज में लैंगिक समानता धीरे–धीरे लैंगिक असमानता समानता में परिवर्तित हो गई। सती प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या हत्या जैसी गैर मानवीय कुप्रथाओं का बोलबाला हो गया। मध्यकाल में मुस्लिम साम्राज्य की शुरुआत से ही स्त्रियों की और दुर्दशा हो गई। 18 वीं शताब्दी के आते–आते भारत में नारी समाज केवल भोग की वस्तु बनकर रह गया। यदि हम वैश्विक परिदृश्य में नारीवाद की पृष्ठभूमि को देखें तो न केवल यूनान अपितु विश्व के सभी भागों में महिलाओं की स्थिति चिंताजनक थी।

यूरोप में पुनर्जागरण उदय ज्ञान की एवं उन्नति की नई सुबह लेकर आया साथ ही पुरातन सामंतवादी राजतंत्र वादी एवं अधिकार विहीन व्यवस्थाओं के विरुद्ध एक नया संदेश भी लेकर आया। तथापि यह परिवर्तन एकदम नहीं हुआ। इसके पीछे अनेक आंदोलन क्रांति एवं असंख्य बलिदान की विशेष भूमिका रही तभी जाकर अमेरिकी क्रांति ब्रिटिश ग्लोरियस रिवॉल्यूशन, फ्रेंच रिवॉल्यूशन और बीसवीं शताब्दी में औपनिवेशिक साम्राज्यवाद का अंत लोकतांत्रिक मूल्यों मानव अधिकार एवं मानवी कर्तव्य का संदेश लेकर आया।

आधुनिक युग में भले ही शासन व्यवस्था ही परिवर्तित हो गई लोकतंत्र आ गया। मानव अधिकार आ गए और भी अनेक सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन आए किंतु महिलाओं के जीवन स्तर में वांछित परिवर्तन नहीं आया। इसके विरुद्ध नारी समाज बौद्धिक चेतना के कारण परिवर्तन की मांग करने लगा। और पुरुषों के समान अधिकारों की मांग करने लगा। यूरोप में नारीवाद की शुरुआत 19 वीं शताब्दी में हो गई और अनेक उतार–चढ़ाव के बावज्द नारीवाद एक वैश्विक आंदोलन बन गया। आज के संदर्भ में नारी आंदोलन सार्वभौमिक हो गया है। सभी महाद्वीपों में नारी समाज अपने अपने स्तर पर स्वयं को संगठित कर रहा है। नारी आंदोलन नारी की वैश्विक प्रवृत्ति के बावजूद इसके स्थानीय संदर्भ एवं रूप देखने को मिलते हैं भारत भी स्थानीय नारी चेतना एवं आंदोलन के प्रभाव से नारी शक्ति के सशक्तिकरण की ओर अग्रसर हो चुका है।

नारीवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

संपूर्ण विश्व में महिलाओं को विविध रूपों में परिभाषित एवं रेखा अंकित किया गया है। कहीं उसको पुरुषों की अग्रगामी कहीं अनुगामी कहीं अर्धांगिनी और कहीं उनको भोग की वस्तु अर्थात दासी के रूप में चिन्हित किया गया है। कहने का आशय यह है कि देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार महिलाओं को अनेक आयाम एवं दृष्टिकोण से देखा गया है। किंतु पुरुष प्रधान व्यवस्था में महिलाओं को अपेक्षाकृत निम्नतम स्थान दिया गया और पुरुष को सदैव श्रेष्ठ एवं शौर्य का प्रतीक माना गया। उनको पुरुषों के समान सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक अधिकार नहीं दिए गए। जिसके कारण इनकी स्थिति अमानवीय होती चली गई। अतः ऐसी स्थिति में प्रतिक्रिया स्वाभाविक रूप से नारी समाज की ओर से आधुनिक युग में प्रस्फुटित होती चली गई। प्रारंभ में स्त्रियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। क्योंकि उनकी यह लड़ाई प्रताड़ना अत्याचार एवं लैंगिक दुर्भावना के विरुद्ध थी। दूसरी ओर पुरुष प्रधान मानसिकता नारी की आवाज को अपने विरुद्ध विद्रोह मानकर इसको दबाना चाहती थी। पुनर्जागरण का युद्ध युग नारी समाज के लिए देर से ही सही नया संदेश लेकर आया तथापि 19वीं शताब्दी से पूर्व यूरोप में एवं इनके अधिनस्थ औपनिवेशिक समाजों में स्त्रियों की स्थिति दास से भी बदतर थी और तथा कथित लोकतंत्रवादी एवं उदारवादी चिंतक होने का दावा करने वाले स्त्रियों की अधिकारों के प्रति उदासीन थे ।

पुरुषों को कुछ गुणों का विशेष अधिकारी माना जाता था क्योंकि वे पुरुष हैं इसलिए उनको महिलाओं की अपेक्षा विशिष्ट स्थिति एवं अधिकार समाज में दिए गए थे। उनक पक्ष में अनेक छूट दी गई थी जबकि नारियों को स्त्री होने के कारण अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक और धार्मिक भेदभाव का सामना करना पड़ता था। उनकी स्थिति पुरुषों की अपेक्षा बदतर थी। यह भेदभाव पूर्ण

व्यवस्था यूनानी काल से मध्यकाल एवं आधुनिक युग के प्रारंभ मं लगभग पूरे विश्व में प्रचलित थी। बाइबिल में स्त्री को पुरुष की अपेक्षा कमतर माना गया है। मुस्लिम एवं हिंदू साहित्य में भी नारी भेदभाव के अनेक दृष्टांत एवं आधार पाए जाते हैं जिनका पुरुष प्रधान व्यवस्था में दुरुपयोग आज भी किया जाता है। प्लेटो ने महिलाओं का सामूहिक उपभोग करने का जो संदेश दिया उसके पीछे राजा के मन में स्त्री विशेष के प्रति मोह को खत्म करना था, अर्थात स्त्री बुराई का अवगुण का कारण है। प्राचीन भारतीय ग्रंथ मनुस्मृति में नारी की स्थिति अंतर्विरोधपूर्ण व्यक्त की गई है। एक ओर स्त्री की पूजा की बात कही गई है तो दूसरी ओर नारी को स्वतंत्रता के योग्य नहीं माना गया है। अरस्तु ने महिलाओं को पुरुषों से निम्नतम स्थान दिया है। नारीवादी विचारक सिमोन द बुआ के अनुसार नारी समाज का कोई इतिहास नहीं था। और ना ही उनका अपना धर्म था क्योंकि महिलाओं को शिक्षा से दूर रखा गया तथा समाज में पुरुषों को श्रेष्ठ और महिलाओं को निकृष्ट बताया गया था। तथापि यह भेदभाव पूर्ण व्यवस्था आदिम समाज में दृष्टिगोचर नहीं थी। इस प्रकार जब चेतना की नव युग का प्रारंभ हुआ तो महिलाएं शिक्षित एवं जागृत होकर अपने लिए समाज मं उचित स्थान एवं सम्मान की मांग समाज से करने लगी। ऐसी स्थिति में विश्व के अनेक देशों में नारी के पक्ष में आवाज उठाई गई, वही आवाज नारीवाद के रूप में पहचानी जाती है।

नारीवाद क्या है?

नारीवाद को शब्द के रूप में प्रथम बार समाजवादी विचार विचारक चार्ल्स फोरियर नी 1838 में नारियों के लिए समान अधिकार का विचार व्यक्त करने के लिए किया था। नारीवाद शब्द का उपयोग ऐसी विचारधारा एवं आंदोलन के लिए किया जाता है जो हजारों वर्ष से चले आ रहे पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को मुक्ति दिलाना चाहता है। समानता का दर्जा दिलवाना चाहता है। और समाज में पुरुषों के समकक्ष खड़ा करना चाहता है। यह एक वैश्विक आंदोलन है, जो नारी को भेदभाव एवं उत्पीड़न से मुक्त करना चाहता है। आधुनिक युग में नारीवादी चिंतन का प्रारंभ 18 वीं शताब्दी में हो गया था। यह ऐसी विचारधारा है, जो महिलाओं को पुरुषों के वर्चस्व एवं अत्याचार से मुक्त करना चाहती है और नारी के प्रति द्वेष को नष्ट करना चाहती है। यह ऐसा सामाजिक आंदोलन है, जो स्त्रियों को पुरुषों के समान दर्जा दिलवाना चाहता है। नारीवाद का उद्देश्य है महिलाओं को कैसे पुरुषों के समान दर्जा दिलवाया जाए। संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि नारीवाद एक ऐसी संकल्पना है, नारी समानता नारी एकता एवं नारी सशक्तिकरण के भाव से ओतप्रोत है। आज के युग में नारीवाद केवल एक विचारधारा नहीं है अपितु एक सशक्त एवं वैश्विक परिवर्तन का उद्घोष है। दृढ़ आस्था है, दृढ़ विश्वास है एवं दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। नारीवाद

पितृ तंत्र के विरुद्ध एक विद्रोह का बिगुल है जो महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार को समूल नष्ट करना चाहता है और स्त्रियों को समाज में उसका उपयुक्त स्थान सुनिश्चित करना चाहता है और यह स्थान है भेदभाव मुक्त समतामूलक एवं सशक्त नारी समाज का निर्माण। नारीवाद की प्रमुख विचारक मेरीगोल्ड क्राफ्ट, मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट, जे एस मिल, फायर स्टोन, कैट मिलेट, सीमोन डी बुआ, फ्रीडन, कैरोल पैटमैन, शीला रोबाथम आदि हैं।

नारीवाद की लहरें एवं विचारधाराएं

नारीवाद के संदर्भ में बौद्धिक पुनर्जागरण क पश्चात यदा–कदा कुछ विचारको ने महिलाओं की स्थिति पर विचार व्यक्त किए, किंतु कोई व्यवस्थित एवं सारगर्भित रचना अथवा आवाज उभर कर नहीं आई। और ना ही अभिव्यक्त की गई। 1791 में नाटककार ओलम्पे दी गोजेस ने महिला और महिला नागरिक की अधिकारों की घोषणा को प्रकाशित किया, जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देने की बात कही गई। और एक समान साथी के रूप में नारी को घोषित किया गया। 1792 में मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने अपनी पुस्तक इंडिकेशन ऑफ राइट्स ऑफ वूमेन में इस धारणा को परिवर्तित करने का प्रयास कि औरत पुरुषों को खुशी देने एवं उपभोग करने की वस्तु है। अपितु उसने महिलाओं के अधिकार उनके लिए शिक्षा काम और राजनीति में समान सहभागिता दिए जाने की मांग की। उसने महिलाओं को बौद्धिक रूप से पुरुषों से कम नहीं माना। अपितु पुरुषों की तरह उसे विवकशील बताया। जब फ्रांस में 1789 क्रांति हुई तो महिलाओं के लिए भी आवाज उठाई गई। इस क्रांति में महिलाओं ने भी सक्रिय भाग लिया था। अतः फ्रांसीसी क्रांति के बाद 1791 में महिला शिक्षा का प्रावधान किया गया और 1792 में महिलाओं को कुछ अधिकार दिए गए और 1794 में कानून द्वारा तलाक देने की व्यवस्था को महिला के अनुकूल बनाने का प्रयास किया गया। 1840 के दशक में अमेरिकी समाज में महिलाओं की स्थिति को लेकर बौद्धिक प्रक्रिया एवं प्रतिक्रिया प्रारंभ हो गई थी। इसी दशक में सेनेका फोल्स अधिवेशन हुआ जिसमें महिलाओं के अधिकारों की मांग की गई। और आगे चलकर 1869 में स्त्रियों को वोट देने के अधिकार के लिए एक राष्ट्रीय स्तरीय एसोसिएशन का गठन किया गया। इस प्रकार के संगठन पूरे यूरोप में गठित होने लगे। नारीवाद की। इस वैश्विक आवाज का पहला फल न्यूजीलैंड में मिला, जब 1893 में महिलाओं को मताधिकार दिया गया। अमेरिका में 1920 और ब्रिटेन में 1928 में महिलाओं को राजनीतिक अधिकार दिए गए। इस प्रकार 1970 के दशक के आते–आते नारीवाद ने अपने आप को एक सशक्त एवं वैश्विक आवाज बना लिया।

नारीवादी आंदोलन की अनेक चरण हैं। प्रथम चरण 1860 के दशक बाद उभर कर आया जिसमें नारीवादियों ने मताधिकार स्वतंत्रता और समानता पर जोड़ दिया। 1960 के बाद दूसरा चरण आगे बढ़ता है जिसमें योन क्रांति की शुरुआत होती और महिलाओं के लिए समान सामाजिक, आर्थिक अधिकारों की मांग की जाती है। घरेलू हिंसा तथा परिवार के संबंध में स्वयं निर्णय लेने का अधिकार महिला को होना चाहिए। 1990 के दशक के बाद तीसरी लहर आती है। जिसमें नारीवादी आंदोलन नक्सलवाद रंगभेद और वर्गवाद को परिवर्तित करना चाहता है जिसमें हाशिए पर खड़े हुए वर्गों को पहचान देने और प्रजनन संबंधित अधिकार देने की मांग जोरदार ढंग से उठाई जाती है।

2000 के पश्चात् नारीवाद नव नारीवाद की ओर अग्रसर है, जिसमें पर्यावरण जानवर उत्पीड़न और महिलाओं के उत्पीड़न की समस्याएं उठाई गई है। वंदना शिवा नव नारीवादी विचारक हैं। इस प्रकार नारीवाद अपने राजनीतिक आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों को दृष्टिगत रखते हुए समाज में अपना स्थान और महत्व स्थापित करना चाहता है। पुरुषत्व के विरुद्ध नारीत्व की पहचान खोजना आज की नारीवाद का मुख्य उद्देश्य बन गया है। नव नारीवाद, बहु सांस्कृतिक नारीवाद और समतामूलक नारीवाद का समन्वित रूप स्थापित करने की ओर अग्रसर है विशेषतः नारी की पहचान को निरंतर सशक्त बनाना चाहता है।

नारीवाद के संदर्भ में तीन विचारधारा प्रचलित है पहली उदार नारीवाद दूसरी उग्र नारीवाद और तीसरी समाजवादी नारीवाद है। उदारवादी नारीवाद में समाज की संरचना को लोकतांत्रिक ढांचे के अंतर्गत महिलाओं को राजनीतिक अधिकार कानूनी सुधार के माध्यम से समानता स्थापित करना चाहते हैं। उदार नारीवाद 19वीं और 20वीं शताब्दी में महिलाओं को मताधिकार राजनीतिक सहभागिता और शिक्षा का अधिकार देना चाहता है। इस विचारधारा को यथार्थवादो व्यवहारिक एवं सौहार्दपूर्ण सामाजिक परिवेश का निर्माण करने वाली माना जा सकता है। मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ,जे एस मिल, ईवा कॉलस्टे[3] (नार्वेजियन एसोसिएशन वूमेन राइट्स) आदि विचारक उदारवादी नारीवाद से जुड़े हुए है। सामाजिक नारीवाद व्यक्तिवादी नारीवाद राज्य नारीवाद समता नारीवाद इत्यादि उदारवादी नारीवाद की उप शाखाएं हैं। आज भी उदार नारीवाद को मध्यमवर्गीय समाज द्वारा स्वीकार किया जाता है। और यह नव नारीवाद के साथ सामंजस्य का मार्ग प्रेषित करता प्रतीत होता है।

उग्र नारीवाद के अनुसार सार्वजनिक और आर्थिक जीवन में महिलाओं के साथ लैंगिक भेदभाव व्याप्त है। इसका कारण पारिवारिक अथवा निजी क्षेत्र में पाई जाने वाली विषमता है। पितृसत्तात्मक

व्यवस्था लिंग एवं जेंडर के आधार पर स्त्री पुरुष के संबंध निर्धारण में अंतर्विरोध, पारिवारिक कार्यों में स्त्री के साथ भेदभाव, राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में पुरुषों का वर्चस्व, और सार्वजनिक तथा निजी जीवन में भेदभाव महिलाओं के साथ होने वाले शोषण एवं भेदभाव का मूल कारण है। जेंडर आधारित संघर्ष जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। कैट मिलेट, साइमन द बुआ और ओकिन ने इस विचारधारा को आगे बढ़ाया है। इनका यह मानना है कि राजनीति का यह क्षुद्र व विद्रूप रूप हर क्षेत्र में व्याप्त हैं। यहां तक कि राज्य भी तटस्थ नहीं है। उसके द्वारा भी महिलाओं के साथ भेदभाव को बढ़ावा दिया जाता है। आज भी विश्व के अनेक देशों में सरकारे जेंडर आधारित भेदभाव करती हं। सीमोन द बुआ का कहना है कि नारी पैदा नहीं होती बल्कि नारी बना दी जाती है। अर्थात् सामाजिक क्षमता को जैविक भेदभाव से जोड़ दिया गया है। जबकि स्त्रीत्व पर आधारित भेदभाव समाज द्वारा निर्मित है। नारीवादी विचारक मैकिनॉन ने कहां है कि पुरुषों का प्रभुत्व नारो पर घर में बिस्तर पर रोजगार में सड़क पर और जीवन के पूरे क्षेत्र पर हैं। कैरोल पेटमैन का कहना है कि पितृसत्ता व्यवस्था की रहते हुए महिलाएं स्वतंत्र नहीं हो सकती। और अभी भी महिलाएं स्वतंत्र नहीं है यहां तक कि उनका अपने शरीर पर भी अधिकार नहीं है। उन्होंने कल्याणकारी राज्य को भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था कहा है। उग्र नारीवाद महिलाओं के लिए शिशु पैदा करने की स्वतंत्रता विभाग की स्वतंत्रता गर्भपात संबंधित अधिकार एवं परिवार और सामाजिक स्तर पर होने वाले हिंसात्मक व्यवहार से मुक्ति प्राप्ति चाहता है। परिवार समाज और राज्य की संस्थाओं में महिलाओं के साथ न्याय पूर्ण व्यवहार होना चाहिए। लैंगिक शोषण का अंत होना चाहिए। लैंगिक शोषण एवं लैंगिक विषमता से मुक्त समाज का निर्माण होना चाहिए। जब तक परिवार शिक्षा कार्यक्षेत्र और सार्वजनिक जीवन में पुरुषों की प्रधानता है तब तक नारी शोषण जारी रहेगा। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ही हर काल में नारी शोषण एवं अन्याय का मूल कारण रहा है अतः इसका अंत होना चाहिए। महिला शोषण के लिए जो जैविक तर्क दिए जाते हैं उनका भी अंत होना चाहिए।

समाजवादी नारीवाद ने स्त्रियों को सर्वहारा वर्ग के रूप मे देखा है। अतः इनका मानना है कि जब तक समाज में आमूलचूल परिवर्तन नहीं होगा महिलाओं को शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती। इन्होंने पितृसत्तात्मक व्यवस्था की व्याख्या सामाजिक आर्थिक संदर्भ में की है। एंजेल्स ने अपनी रचना ओरिजिन ऑफ फैमिली प्राइवेट प्रॉपर्टी एंड द स्टेट में बताया है कि पूंजीवादी व्यवस्था एवं निजी संपत्ति के उद्‌भव के कारण महिलाएं अपने अधिकारों से वंचित हुई है। पूंजीवाद के कारण पारिवारिक जीवन भेदभाव युक्त हो गया, परिवार में महिला के साथ शोषण होता है, पुरुषों द्वारा अपने विशेषाधिकार एवं संपत्ति की रक्षा के लिए दंत कथाओं का प्रयोग किया जाता है, रूमानी प्रेम और ढोंग पूर्ण व्यवहार किया जाता है। अतः साम्यवाद की स्थापना के बिना नारी विषमता का

अंत नहीं हो सकता। वास्तव में यदि देखें तो हम यह पाएंगे कि राज्य एवं इसकी संस्थाएं लैंगिक विषमता पूर्ण व्यवहार को प्रोत्साहन दे रही हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था भी पुरुष प्रधान व्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रही है। अमेरिका जैसे देश में आज तक महिला का राष्ट्रपति ना बनना इस बात को भी व्यक्त करता है?

भारत में नव नारीवाद

भारत में स्त्री प्राचीन काल से सदैव श्रद्धेय मानी गई है किंत, कुछ कुरीतियों एवं विदेशी संस्कृति के प्रभाव से नारी का सम्मानित स्थान धीरे–धीरे अमरनाथ ह्रास होता चला गया। आधुनिक युग में राजनीतिक चेतना एवं राष्ट्रवाद के उद्भव और पाश्चात्य शिक्षा के प्रारंभ होने के साथ महिलाओं के प्रति एक नवीन प्रगतिशील चिंतन का अभ्युदय 19वीं शताब्दी के सुधारवादी आंदोलनों में अभिलक्षित होता हुआ एक सशक्त हस्ताक्षर बनकर उभरा है। निसंदेह भारत में नारी की स्थिति सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक संदर्भ में देखें तो कमजोर नजर आती है। अनेक कानून एवं संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद महिलाओं की स्थिति विशेषता ग्रामीण क्षेत्रों में स्वतंत्रता की 75वीं सालगिरह पूर्ण होने के बावजूद कोई सुधार संतोषजनक स्थिति तक नहीं पहुंच पाया है। भारत में भी नारीवाद अर्थात महिलाओं के अधिकारों की आवाज बुलंद करने वाली विचारधारा अनेक चरणों से गुजरते हुए नव नारीवाद अर्थात 21वीं सदी में प्रवेश कर चुकी है। भारतीय नारीवाद पाश्चात्य नारीवादी विचारों से अलग है और भारतीय सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश के साथ सामंजस्य बैठाते हुए महिलाओं को लैंगिक समानता, राजनीतिक अधिकार, समान शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधा आर आर्थिक सहभागिता की आवाज उठाता है। भारत में नारी हितों के लिए संघर्ष करने वालों में सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख, पंडिता रमाबाई दुर्गाबाई देशमुख, वनिता बागची, मीरा पाठक, मेघा पाटकर, अमृता प्रीतम वंदना शिवा, निवेदिता मैनन आदि अग्रणीय महिलाएं हं। राजनीतिक मंच पर इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, मायावती, प्रतिभा पाटिल आदि ने दृष्टांत बनकर नारी को स्वयं अपना स्थान पुरुष प्रधान समाज में स्थापित करने का मार्ग दिखाया है। किन्तु अभी भी राजनीतिक क्षेत्र में नारी प्रतिनिधित्व स्थानीय संस्थाओं को छोड़कर पुरुषों की अपेक्षा बहुत कम है और अपराधिक क्षेत्र में सबसे अधिक अपराध महिलाओं से जुड़े हुए होना। एक दुखद कटु सत्य है। इन विपरीत स्थितियों का अंत करना एवं न्याय पूर्ण समतामूलक लैंगिक समानता युक्त 21वीं सदी के भारत का निर्माण होना चाहिए ऐसी अपेक्षा भारतीय नारीवाद करता है। सरकार के द्वारा महिला सशक्तिकरण एवं कन्या भ्रुण हत्या को रोकने के लिए सशक्त कानूनी प्रावधान की सफलता एक सकारात्मक पहल मानी जा सकती है।

♦♦♦♦♦

2

नारीवादी परिप्रेक्ष एवं नव–उदारवाद

डॉ राखी

सहायक प्राध्यापक, भारती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

नारीवादी अवधारणा की प्रासंगिकता तथा वर्तमान में इसका विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग एक महत्वपूर्ण पक्ष के रूप में नव–उदारवाद के मूलभूत सिद्धांतो से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। हालाँकि नारीवाद विवादो से घिरा एक ऐसा शब्द है जिसे करीब से देखने पर इसकी शाखाओं में एक संजाल का स्वरूप प्रतीत होता है जो इसके विभिन्न सिद्धांतो का प्रतिनिधित्व करता है। यह अवधारणा एक युग का अंत होने के साथ ही साथ, अन्य युग का आरंभ है, जिसमें आने वाले युग को वास्तव में इतना नया बनाया जायेगा कि यह देखना होगा कि हमारे जीवन क अनुभव में कुछ वास्तविक कट्टरपंथी पुनर्व्यवस्था शुरू ना की जा सके।

पारंपरिक नारीवाद में स्त्री के रूप में निम्न माने जाने वाले आधारों के माध्यम से सशक्त होने के रूप में महिलाओं का एक उभरता हुआ दृष्टिकोण पुरुषों के साथ इनकी समानता के दावों पर महिला महिमामंडन का सार प्रस्तुत करता है। नारीवाद पुरुषों और महिलाओं के बीच समान अधिकारों की वकालत करने वाला एक आंदोलन है (जो हाल के वर्षों में सभी वर्गो में विकसित हुआ है), जो इस आंदोलन का समर्थन करने हेतु एक महत्वपूर्ण कदम है। यह महिला वर्चस्व है।

नव–नारीवाद इसी संदर्भ में महिला महिमामंडन का एक विकसित स्वरूप है। यह समाज के माध्यम से नारीवाद की एक नई लहर प्रस्तुत करता है। नव–नारीवाद की परिभाषा तब कार्यरत होती है जब ''एक महिला मानती है कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कार्यक्षेत्र तथा जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व मिलना चाहिए और अधिक प्रभावशाली होना चाहिए साथ ही यह पुरुषों के साथ समानता के दावों पर महिला प्रतिनिधित्व को प्रस्तुत करती है''। इस परिभाषा के अनुसार इसमें अस्पष्टता के आधार पर कुछ आधारिक प्रश्न उठाये जाते है, जैसे क्या नारीवादियों की ये नई लहर उन चीजों को दरकिनार कर देती है जिनके लिए उनके पूर्व कि लहरों ने शुरुआत की और उन्हें एक पायदान पर रखने की मांग की थी ? क्या ये महिलाएं अनुचित व्यवस्था से न्याय के लिए लड़ती हैं।

इस संदर्भ में नव–नारीवाद की समझ प्राप्त करने का एकमात्र तरीका इसे सभी दृष्टिकाण से देखना है । नव–नारीवाद, जिसे नारीवाद की पांचवीं लहर के रूप में भी जाना जाता है, इसमें परिवर्तन कि मांग करती है जो कि एक महत्वपूर्ण चर्चा है। इस मान्यता के अनुसार महिलाएं विश्वसनीयता और समानता का अधिकार रखती हैं तथा इनकी यह मांग अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह नया आरंभ इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि नव–नारीवादी क्रांति द्वारा वास्तव में इस विषय में कुछ नई घोषणाएं की गई है। इस क्रांतिकारी लहर द्वारा कुछ समय से निरंतर नई घोषणाएं की जा रही है लेकिन इसे पूरी तरह से पहचाना नहीं जा सका है। इस प्रतिमान का समर्थन इस विषय में निरंतर जारी रहता है इसके साथ ही अधिकांश सामाजिक संबंधों में यह विचारधारा अभी भी अपनी पहचान का पता लगा रही हैं। समाज में हम स्वयं और अन्य लोग इस बात के अनुसार कार्य करते है कि कौन प्रमुख है कौन विनम्र है, कौन निर्णय करता है, कौन आज्ञा का पालन करता है, किसे स्थगित किया जाना चाहिए और किसकी निरंतरता आवश्यक है। प्राथमिक रूप से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और धार्मिक मामलों में यौन संबंधो के संदर्भ में इस प्रतिमान को लागू करना आवश्यक है। नारीवाद कि प्रासंगिकता को जांचना इस प्रतिमान के समक्ष चुनौती के रूप में सामने आया है। इस पहचान को स्वीकार करने और इस भूमिका को निभाने हेतु सभी सामाजिक संबंधों में महिलाओं की स्थिति एक गहरा बदलाव दर्शाती है, और जिस तरह से उन्हें आदेश दिया जाता है, और उन्हें द्वितीय स्थान दिया जाता है, यह विषय इस अवधारणा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

इस संबंध में यह समझना आवश्यक है कि हर नारीवादी विचारधारा पुरुषों से घृणा करने वाली समलैंगिक इकाई नहीं है, यह समाज की संकुचित धारणा के विरुद्ध प्रचलित एक नई संरचना है जो इस तथ्य को भी नही नकारती है कि हां स्त्री–द्वेष के विपरीत कुछ नारीवादी अपने व्यक्तव्यों में गलत हो सकते हैं। महिलाओं के लिए समानता की व्याख्या उनके कपड़ों की पसंद और स्वयं की सामाजिक प्रस्तुति के रूप में व्याप्त है तथा कुछ लोगों का मानना है कि पुरुषों के साथ समानता प्राप्त करने के लिए उन्हें खुद मर्दानगी के स्तर पर बढ़ना चाहिए। नारीवादियों की श्रेणी में आने का दावा करने वाली महिलाओं द्वारा उनके दृष्टिकोण को लक्षित और विच्छेदित करने का प्रयास किया गया है।

नव–नारीवादी चेतना संपूर्ण रूप से वास्तविक चेतना है। यह हर वर्ग को समान रूप से महत्व देती है एवं इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करती है कि कुछ लोग किसी कार्य को करने में अन्य से बेहतर होते हैं तथा उनसे भिन्न होते हैं जिनके गुणों और अंतरों के अनुसार ही उनकी श्रेणी निर्धारित कि जा सकती है। लेकिन ये अंतर और श्रेणी कुछ विशेष गुणवत्ता के संबंध में ही कार्यरत हैं जिसे व्यक्ति से समग्र रूप से अलग रखा गया है। इस अर्थ में नव–नारीवाद विशिष्ट उद्देश्यों के लिए ध्यान केंद्रित करने हेतु पुरुषवादी पक्ष को अवशोषित करता है। हालांकि, यह यहीं नहीं रुकता

है बल्कि व्यक्ति को विशिष्ट कार्यों में श्रेणी भी प्रदान करता है यह व्यक्तियों को व्यक्तियों के रूप में मान्यता देता है, न कि कार्यकर्ताओं के रूप में, इस प्रकार यह ''परिपूर्ण'' होने का प्रयास करता है, भले ही वास्तविकता स्वयं ''परिपूर्ण'' हो अन्यथा नहीं। नव नारीवादी चेतना अनिवार्य होने के बजाय इसके अस्तित्व के रूप में महत्वपूर्ण मानी जाती है। पुरुषवादी अमूर्त चेतना आवश्यक रूप से प्राणियों को उनके सार के संदर्भ में समझती है और विशेषताओं और गुणों को क्रमबद्ध करती है ताकि प्राणियों को वर्गीकृत किया जा सके।

यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि हम अन्याय के रूप में सामाजिक विभाजन के प्रति संवेदनशील हैं, तथा सम्मानजनक और गौरवशाली परिस्थिति के लिए सभी के बीच सहयोग और दोस्ती लंबे समय तक बना रहना प्रगति का परिणाम है जो कि ज्ञान और प्रौद्योगिकी में मर्दाना चेतना का विश्लेषण और ध्यान केंद्रित करके ही प्राप्त किया जा सकता है। स्त्री चेतना की विधि, हालांकि, अलग है, यह किसी वर्ग को बाहर करके नहीं बल्कि उसे शामिल करके अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है। भविष्य की नई स्त्री से अपेक्षा की जाती है कि वह मर्दाना तर्कसंगत योगदानों को अपने आप में निहित कर अवशोषित करेगी, उन्हें अपनी बौद्धिक अंतदृष्टि के माध्यम से आगे विकसित करेगी और अंततः एक नया अस्तित्व सामने लाएगी। नव–नारीवादी चेतना संपूर्ण रूप से ठोस एवं वास्तविक समाज की चेतना है, और यह प्रत्येक वर्ग को समान रूप से महत्व देती है। इस तथ्य की उपेक्षा नहीं करता है कि कुछ लोग इस कार्य या उस में बेहतर हैं, कि वे कुछ गुणों के अनुसार भिन्न होते हैं और इन अंतरों के अनुसार पंक्तिबद्ध किए जा सकते हैं। लेकिन सब ये अंतर और पंक्ति कुछ विशेष गुणवत्ता के संबंध में हैं जिसे व्यक्ति में समग्र रूप से शामिल किया गया है।

नव–नारीवादी चेतना कि नव–उदारवादी व्यवस्था इस विषय पर आधारित है कि परिवर्तन इस विषय में सकारात्मक योगदान प्रदान करता है। इस आधार पर यह परिवर्तन कि मांग करता है कि पारस्परिक निषेध द्वारा नहीं बल्कि आपसी संतुष्टि द्वारा स्त्री को पहचान प्रदान की जा सकती है। रुचि इस बात में नहीं है कि मैं स्वयं को दूसरे से अधिक कैसे बढ़ावा दे सकता हूँ, बल्कि इस बात में है कि मैं दूसरे को उनके विकास में कैसे बढ़ावा दे सकता हूँ, दूसरे के सराहनीय गुणों की पुष्टि कैसे कर सकता हूँ, दूसरे के अच्छे बिंदुओं को सुदृढ़ कैसे करू, मैं दूसरे की क्षमता के विकास में योगदान कैसे दे सकता हूँ, मैं दूसरों से मेरे अंदर आने वाली पुष्टि का अनुभव कैसे करता हूँ एवं मैं दूसरों को उन लोगों के रूप में पहचानता हूँ जिनके लिए मैं अपना संदेश भेज सकता हूं जिससे कि ऊर्जा की पुष्टि की जा सके और मैं स्वयं को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचान को मान्यता दूँ जो अन्य से सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त कर सकता है। नव–नारीवादो चेतना, हालांकि इससे अधिक स्त्री पराधीनता एवं मर्दाना वर्चस्व से अग्रिम स्तर के रूप में एक बौद्धिक अंतर्ज्ञान है।

संदर्भ सूची

- Herr, Ranjoo. Seodu. (2014). Reclaiming Third World Feminism: or Why Transnational Feminism Needs Third Wolrd Feminism. Vol 12, No 1. Duke University Press.
- Bruteau, Beatrice. (1977). Neo- Feminism And The next Revolution in Consciousness. Vol 27. No 2. Wiley.

♦♦♦♦♦

3

नव–नारीवादी प्रतिमानः स्थान, सम्मान एवं स्वाभिमान

माधुरी

शोधार्थीए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

यह आलेख नारीवादी परिपेक्ष्य के नवीनता पर केंद्रित है। यह नवीनता विभिन्न प्रकार के नवीन विषयों को दर्शाती है। यह विषय सर्वव्यापी होने के कारण नारीवादियों और उनसे संबंधित बौद्धिक जगत के कार्यकर्ताओं के लिए विचारणीय है। इस आलेख की शुरुआत नारीवाद के उदय–उसके मूल स्वरूप से की गई है। दूसरे खंड में भारत, ईरान ,सऊदी में आंदोलनों का वर्णन और उसके नवीन स्वरूप का वर्णन कल्याणकारी राज्य के संदर्भ में किया गया है। तीसरे खंड में उपरोक्त उदाहरणों को नव सामाजिक आंदोलनों के संदर्भ में देखा गया है।

नारीवाद यूं तो समाज में व्याप्त कुरीतियों, समानता और सामाजिक दृष्टिकोण के अंतर्गत आने वाले हर उन विषयों जैसे धर्म और उससे संबंधित कार्य के चलते होने वाले बुरे प्रभाव के विरुद्ध आवाज उठाने और उसके साथ–साथ सामाजिक चेतना को जागृत करने के लिए सैद्धांतिक तौर पर मत व्यक्त करने से शुरू हुआ। परंतु समय के साथ–साथ इसके प्रारूप और मुद्दों दोनों में नवीनता दिखाई दी।

नारीवाद के विभिन्न प्रतिमान है परंतु प्रत्येक का मुख्य बिंदु बदलाव पर केंद्रित रहा है और यही बदलाव नवीनता की ओर इशारा करते हैं। नारीवाद के नवीन स्वरूप मुख्य रूप से उसके नवीन प्रयासों की तरफ है जिसका प्रमुख उदाहरण है भारत में हो रहे और इरान में हो रहे बदलाव। बौद्धिक जगत में इस पर कई बार कई चिंतकों ने लिखा जिसमें भारतीय चिंतक और पाश्चात्य चिंतकों की मुख्य भूमिका रही है उदाहरणार्थ जे एस मिल ग्राजा राम मोहन रॉय इत्यादि इन नारी वादियों का विषय मुख्यता अपने–अपने सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर था जैसे कि जे एस मिल नारी के मताधिकार की बात करते हैं तो वहीं राजा राम मोहन रॉय सती प्रथा जो कि उस समय के कुरीतियों में से एक थी उसे समाप्त करने की बात करते हैं। नारीवादी और उससे संबंधित प्रयास कार्य एक आंदोलन है जोकि कई सदियों से लेकर अभी तक चली आ रही है और यह अपने संक्रमण काल में है और इस संक्रमण काल में नवीन विषयों को समाहित कर रहा है।

न्याय स्थापित करने के लिए समाज में व्याप्त असमानता के विभिन्न आयामों को समाप्त करना और उसके लिए अधिकारों का दायरा भी बढ़ाना आवश्यक है हमारा विषय भी इसी की ओर इंगित करता है। इन्वेंटिव रिसर्च में मुख्यतः प्रारूप एक होता है और समय के साथ उस में विभिन्न विशेषताएं जुड़ती चली जाती हैं और यही प्रक्रिया हमें आज के नारीवादी स्वरूप में देखने को मिलती है उदाहरणार्थ भारतीय संदर्भ में सामाजिक श्रेणी में सती प्रथा का चलन और उसकी समाप्ति एक मुख्य बिंदु है दूसरे चरण में औपनिवेशिक काल से निकलने के बाद अधिकारों का संरक्षण इसके अर्थात् नारीवादी के मुद्दे में बदलाव को दिखाता है। अधिकारों का संरक्षण में भी कई चरण का समावेश अभी तक हो चुका है जैसे 33ः आरक्षण यही नहीं बल्कि दूसरे क्षेत्रों में मातृत्व की देखभाल काम करने के जगह पर स्वतंत्र रूप से काम का निर्वहन करने की सुरक्षा प्रदान करना इत्यादि यह नवीन मुद्दें हैं जो कि यह दर्शाते हैं कि कैसे एक सैद्धांतिक प्रयास में समय के बदलाव के साथ–साथ उसके मुद्दों में भी बदलाव और नवीनता आती है।

वहीं दूसरी तरफ यह व्यवस्था यह नवीनता समाज और राज्य के कल्याणकारी प्रारूप को भी इंगित करता है जिसका प्रथम उद्देश्य नागरिकों को बहुआयामी सुरक्षा व्यवस्था मुहैया कराकर उसके विकास और स्वतंत्रता को बढ़ावा देना है भारतीय संविधान के खंड चौथे में राज्य के नीति निर्देशक तत्व का वर्णन हमारे इस कथन को सत्यापित करता है और हाल के समय में ट्रिपल तलाक का विषय इस बात का उदाहरण है जो पूर्ण रूप से नारी समुदाय में ही विभेद की स्थिति पैदा करता है और ट्रिपल तलाक का कानूनी रूप से निषेध नारी के न्याय को स्थापित करने के लिए और समानता की समाप्ति कर उसके स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिए एक निश्चित ही अच्छा स्वागत कदम है।

ना सिर्फ भारत अपितु इसके पड़ोसी देश जैसे पाकिस्तान बांग्लादेश श्रीलंका में भी ट्रिपल तलाक का कानूनी निषेध है आज विश्व भर में ईरान में हो रहे आंदोलनों की चर्चा है जिसकी शुरुआत हुई एक 22 वर्षीय महिला के हिजाब ना पहनने से और उसकी मृत्यु से यह कारण पूरे ईरान में एक आंदोलनों को जन्म दिया और एक विश्वव्यापी रूप धारण कर लिया जिसमें ऑकलैंड मेलबर्न लंदन पेरिस न्यूयॉर्क स्टॉक होलसेल शामिल है ईरानी कानून महिला को उनके पोशाक के साथ सिर को ढकने का प्रावधान करती है और यह ना करने पर सजा का प्रावधान भी है।

यह नारीवादी स्वरूप और इससे संबंधित यह दो समस्याएं इस बात की तरफ हमें अग्रसर करते हैं कि कैसे यह कारक धार्मिक कारकों से प्रभावित हो रही है परंतु इसके खिलाफ प्रदर्शन भी इस बात की ओर इंगित करता है कि यह हर धर्म तब का समाज से परे है यह तथ्य एक विरोधाभास को भी दिखाता है क्योंकि ना सिर्फ धर्म अपितु समान धर्म में भी नारी की स्थिति में विभेद को

देखने को मिलता है जिसका वर्णन हमें अमर्त्‌य सेन की कृतियों में भी देखने को मिलता है जो यह बताते हैं कि कैसे वर्ण व्यवस्था में विराजमान एक शूद्र महिला की स्थिति एक अभिजात और ऊंचे तबके के महिला की स्थिति से विभिन्न होती है और कमतर होती है।

कर डिश (इरान) नगरों ने यह निश्चित किया कि राज्य को कर नहीं दिया जाएगा यह बताता है कि कल्याणकारी राज्य में नागरिकों की सुरक्षा उनका विकासर् समानता और अधिकार और इन सब को हासिल करने के लिए अवसरों व्यवस्थाओं को अनुकूल बनाना कितना आवश्यक है और समय की मांग है ।यही कारण है कि हमें यह देखने को मिल रहा है कि नारीवादी अपने नवीन चरण में विभिन्न प्रयासों से मुद्दों से और तरीकों से अपने इस आंदोलन को अग्रसर कर रहे हैं।

वहीं दूसरी तरफ सऊदी अरब अरेबिया जैसे देश में भी नारीवादी के नवीन मुद्दों का स्वरूप देखने को मिलता है जिसमें 2 जून दो हजार अट्ठारह में नारी के ड्राइविंग अधिकार को शामिल किया गया और उन्हें यह देखने को मिला जो यह दर्शाता है कि मुद्दों में नवीनता आई है समय के साथ–साथ ।

नव सामाजिक आंदोलनों का विषय वस्तु मुद्दों में आए बदलाव की ओर दिखाता है जिसमें उपरोक्त कथन एक विचारणीय उदाहरण है। नारीवादी के प्रचार के तरीकों में दो महत्वपूर्ण तरीके और रणनीति महत्वपूर्ण है। पहला जिसमें नारीवादी समाज राज्य में व्याप्त कानून और सिद्धांतों को कैसे प्रभावित करते हैं जब मुद्दों का समावेश का प्रश्न आता है और इसका उद्देश्य यह होता है कि कैसे समाज और राज्य में व्याप्त वह कानून नारी के लिए घातक है दूसरी रणनीति है चेतना का विकास करना यह दोनों ही रणनीति का प्रतिबिंब हमारे उपरोक्त कथन को दर्शाता है जिसमें किसी ना किसी रूप से व्याप्त कानूनों का खंडन किया गया जो कि ना सिर्फ और समानता का सूचक था अपितु स्वतंत्रता में भी बाधक था और इसके फलस्वरूप विश्वव्यापी आंदोलन एक प्रकार का चेतना जागृत करने का रणनीति था।

घनश्याम शाह के अनुसार किसी भी आंदोलन में निम्न घटक होते हैं जिसमें लीडर प्रोग्राम ऑर्गेनाइजेशन आईडियोलॉजी यीशु और इंटरेस्ट होता है और कोई सा भी आंदोलन इन घटकों से निर्मित होता है । सामाजिक आंदोलन में यीशु और इंटरेस्ट अर्थात मुद्दों में बदलाव देखा जाता है और उपरोक्त 3 उदाहरणों में भारत ईरान और सऊदी अरेबिया इन तीनों ही देशों में यह दो घटकों में नवीनता देखी गई आज बौद्धिक जगत इन्हीं नवीनता को उल्लेखित कर रहा है।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन से निम्न बिंदु सामने निकल कर आते हैं पहला समय के साथ बदलाव मुद्दों में भी बदलाव लाते हैं दूसरा नारीवादी का नव स्वरूप कल्याणकारी राज्य की उपयोगिता को दर्शाती है तीसरा नारीवादी से संबंधित मुद्दे कई कारकों से प्रभावित हो रहे हैं जिसमें उपरोक्त आलेख का उदाहरण धार्मिक घटक की ओर संकेत करते हैं।

संदर्भ सुची

चौटर्जी, पार्था.(1997). थीम्स इन पॉलिटिक्स स्टेट एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड इंडिया पेपरबैक्स

भार्गवा, राजीव., आचार्य, अशोक. (2011). का राजनीति सिद्धांत एक परिचय, पीयरसन

डीलएप, लूसी. (2020), फेमिनिज्म ग्लोबल हिस्ट्री, पेंगुइन रेंडम हाउस यूके

गाबा ,ओपी. (2014), एं इंट्रोडक्शन टू पोलिटिकल थ्योरी, मयूर पेपर बैक

मैकिनॉन, कैटरीना. (2012), इश्यूज इन पॉलिटिकल थ्योरी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

शंकरण, कमला., उज्जवल कुमार. (2008), टुवर्ड्स लीगल लिटरेसी एंड इंट्रोडक्शन टू लॉ इन इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली

सेन, अमर्त्य. (2000), डेवलपमेंट एस फ्रीडम, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

शाह, घनश्याम (2008), सोशल मूवमेंट्स इन इंडिया. सेज पब्लिकेशन

सेठ, डीएल, (1992)] मूवमेंट्स, इंटेलेक्चुअल एंड द स्टेटः सोशल पॉलिसी इन नेशन बिल्डिंग. इकोनामिक एंड पॉलीटिकल वीकली

♦♦♦♦♦

4

नव नारोवाद की संकल्पनाः समानता नहीं, सहयोगिता व परस्परपूरकता

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविधालय

नव नारिवाद, नारिवाद का एक रूप है, जो महिलाओं पर पुरुषों की श्रेष्ठता व पुरुषों पर महिलाओं की श्रेष्ठता के स्थान पर महिलाओं व पुरुषों की अभिन्न पुरकता पर बल देता है। तथा गर्भधारण से लेकर प्राकृतिक मृत्यु तक व्यक्तियों का सम्मान करने का समर्थन करता है।

नव नारिवाद, नारिवाद के एक रूप में, इस विचार का समर्थन करता है कि महिलाओं व पुरुषों दोनों के समान मूल्य व गरिमा है। तथा महिलाओं व पुरुषों दोनों में ही भिन्न–भिन्न शक्ति, सामर्थ्य व विचार है। दोनों की ही अपनी–अपनी भूमिकाएं है। नव नारिवाद की मूल संकल्पना यह है कि महिलाओं व पुरुषों में जैविक भिन्नता महत्वपूर्ण है परंतु यौन समानता से किसी भी प्रकार का कोई समझौता नहीं है। नव नारिवाद का मानना है कि महिलाओं को बच्चे के वाहक के रूप में महत्व दिया जाना चाहिए। तथा महिलाएं भी पुरुषों के समान मूल्य वाली व्यक्ति है व सामाजिक व सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक व कानूनी किसी भी विषय में महिलाओं व पुरुषों के मध्य के अंतर को स्वीकार करते हुए उन्हें समान होना चाहिए।

वास्तविकता में नारिवाद महिलाओं व पुरुषों की समानता में विश्वास करता है, किन्तु इसे प्राय मात्र महिलाओं के अधिकारों के संघर्ष के रूप में गलत समझ जाता है। ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं के अत्यधिक भेदभाव, अन्याय, उत्पीड़न का सामना किया है। तथा इसके साथ ही महिलाओं ने अवसरों की कमी का सामना किया है। और ऐसा निरंतर होता रहता है, क्योंकि हम एक पितृसत्तात्मक समाज में रहते है जिसमें पुरुषों के पास सबसे अधिक शक्ति होती है और महिलाओं की तुलना में पुरुषों के पास अधिक अवसर होते है।

इसके साथ ही इस आलेख में एक भिन्न तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है। कि भले ही पुरुषों के पास अधिक शक्ति है, वे भी महिलाओं की भांति ही पितृसत्तात्मक समाज की सीमाओं के अंतर्गत पीड़ित है, क्योंकि पितृसत्ता एक सामाजिक व्यवस्था है जो उन्हें सीमित माध्यमों से कार्य करने के लिए विवश करती है। उदाहरण के रूप में, भावनाओं को व्यक्त नहीं करना, जो

कि मनौवैज्ञानिक रूप से हानिकारक है और सामान्यतयारू उन्हें कठिन समय में किसी से सहायता मांगने से रोकता है व बाधित करता है।

अतः इसका अर्थ यह हुआ कि पुरुषों को नारिवाद की उतनी हो आवश्यकता है जितनी की महिलाओं को नारिवाद की आवश्यकता है। नव नारिवाद पूर्ण मानवता की अवधारणा के विचार को स्वीकृत करता है, पूर्ण मानवता का अर्थ है कि हमें लिंग की अपनी संकीर्ण परिभाषा का विस्तार करना चाहिए। तथा अपनी सभी मानवीय भावनाओं व क्षमताओं व अपेक्षाओं का दृढ़ता से दावा करना चाहिए।

नव नारिवादः पूर्ण मानवता की यात्रा

हम पुरुष व महिला जैसे नाम के लिंग की पहचान करते है, हम सभी सबसे पहले मानव है। हमारे पास समान मानवीय भावनाएं व समान क्षमताऐं है, अतः हमारी प्रतिभा को विभाजित करने का कोई कारण नहीं है। जोर्डी क्वॉयडबैक द्वारा अनुसंधान के माध्यम से पता चलता है कि भावनात्मक विविधता (अर्थात् आपके द्वारा अनुभव की जाने वाली भावनाओं की सीमा) आपकी समग्र सकारात्मक या नकारात्मक भावनाओं की तुलना में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का उत्तम भविष्यवक्ता है। इसलिए यदि आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो आपको उन अधिक आदतन भावनाओं से बाहर निकलना होगा जिन्हें आपको महसूस करने की अनुमति है और इसके स्थान पर उन अन्य लोगों के बारे में जागरूक होना शुरू करें जिन्हें आप अनदेखा कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए, लड़कियों को हर समय अच्छा रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, इसलिए वे सामान्यतया अपने गुस्से को दबा देती हैं या इसे उदासी के रूप में छिपा देती हैं (जो कि सामाजिक रूप से अधिक स्वीकार्य है)। चूंकि सभी भावनाएं मूल रूप से संकेत हैं – और क्रोध एक संकेत है कि आपके जीवन में कुछ अनुचित है और इसे ठीक करने की आवश्यकता है, उस संकेत को दबाने से आप अपने जीवन में अधिक से अधिक आक्रोश उत्पन्न कर सकते हैं।

अतः हमें नारीवाद को लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने व अपनी पूर्ण मानवता तथा पूर्ण क्षमता को अपनाने की सक्रिय प्रथा के रूप में पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है।

दृष्टिकोण में परिवर्तनः सामूहिकता व समग्रता

सामान्यतयाः, जब लड़कियों और लड़कों की बात आती है, तो बहुत अधिक प्रतिद्वंद्विता होती है। जो इस विषय को देखने का एक अदूरदर्शी माध्यम है। ऐसा नहीं हाना चाहिए। हमें स्वयं को याद दिलाना होगा कि हम जो लड़ाई लड़ रहे हैं, वह विश्व के सबसे अहम विषयों के विरुद्ध है?

एक–दूसरे का विरोध करने से नहीं, अपितु शक्तियों में सम्मिलित होने से ही हम अपनी सामूहिक रचनात्मकता और पूर्ण क्षमता का उपयोग आज हमारे सामने आने वाले विश्वव्यापी विषयों का समाधान करने के लिए कर सकते हैं, जिसमें स्वयं लैंगिक असमानता भी सम्मिलित है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। विचारों में तथा कार्यों में सामूहिकता व समग्रता का भाव लाना आवश्यक है। अतः नारिवाद के अर्थ को समझने व समझाने की आवश्यकता है। नारीवाद के सार के बारे में बहुत सी भ्रांतियाँ हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

वर्तमान समय महिलाओं व पुरुषों की समानता तथा पूर्ण मानवता के लिए इस विश्वव्यापी स्वपन्न में एक नया प्रष्ठ प्रारंभ करने के लिए महत्वपूर्ण समय है। जिसके लिए हम सभी को मिलकर इस दिशा में प्रयासरत रहना होगा, जो एक समृद्धशाली समाज का निर्माण कर सकेगा। वास्तव में महिलाएं व पुरुष परस्पर जीवन साथी है, सहभागी है तथा सहधर्मचारी है। महिला जीवन रूपी रथ की सारथी बनकर अपने परिवार को सही मार्ग पर ले जा सकती है। आज महिला जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर चुकी है। उसके कदम दिन–प्रतिदिन आगे की ओर बढ़ रहे है। आज समाज में उसके बढ़ते कदमों कको पुरुषों की सहभागिता की आवश्यकता है। महिलाओं व पुरुषों की परस्पर पूरकता से ही समाज व राष्ट्र का कल्याण होगा।

संदर्भ–सूची–

Carisa R Showden (2009), “What’s Political about the New Feminism?”, *A Journal of Women Studies*, Vol.30 No-02, PP-166-198.

Lucy Komisar (1971), *The New Feminism*, Warner Paperback Library.

https://www.dissentmagazine.org/article/introduction-new-feminism

https://www.dawn.com/news/1540664

♦♦♦♦♦

5

भारत में नारीवाद के परिवर्तित आयामः चुनौतियां एवं संभावनाएं

चंद्रिका आर्य

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

नारीवाद नामक अवधारणा का आधार समाज में स्थापित स्त्री पुरुष के मध्य असमानता है। नारीवादी विचारधारा का मुख्य उद्देश्य स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाना तथा उनके अधिकारों को सुरक्षित करने से संबंधित है। यह अवधारणा स्त्रियों के साथ होने वाले अन्याय पर ध्यान केंद्रित कर उनके उपायों पर विचार करती है। नारीवाद स्त्री पुरुष के मध्य होने वाल भेदभाव का आधार सेक्स और जेंडर को मानता है। नारी वादियों का मानना है सेक्स एक जीव वैज्ञानिक तथ्य है तथा जेंडर एक समाज वैज्ञानिक तथ्य है। नारी वादियों का विश्वास है कि प्रकृ ति द्वारा स्त्री पुरुष में जो शारीरिक रूप से अंतर किया गया है वह उनकी सामाजिक स्थिति का आधार नहीं होना चाहिए। प्राचीन काल से ही स्त्रियों की शारीरिक बनावट व क्षमता को उनके निम्न सामाजिक दर्जे का आधार बना दिया जाता है। स्त्रियों को सामाजिक जीवन में उक्त स्थान नहीं दिया गया तथा उन्हें पुरुषों की तुलना में अलाभ तथा हीनता की स्थिति में रखा गया। नारीवादी विचारकों का कहना है कि पुरुष और स्त्री की भिन्न छवियां उनके जीव वैज्ञानिक अंतर पर आधारित नहीं बल्कि यह सामाजिक मान्यताओं की देन है। पुरुषों की तुलना में स्त्रियों का निम्न स्तर सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों, विचारधाराओं और संस्थाओं की देन है। यह सब मान्यताएं समाज में स्त्रियों के संपूर्ण जीवन पर पुरुष के वर्चस्व को बढ़ावा देती है जिसके परिणाम स्वरूप पितृसत्ता स्थापित होती है। नारीवादी विचारकों का मानना है कि यह पितृसत्तात्मक व्यवस्था ही स्त्रियों के शोषण का प्रमुख कारण है, स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव तथा उनका निम्नस्तर समाज द्वारा निर्मित है जिससे चुनौती दी जानी चाहिए।

ऐतिहासिक विकास

ऐतिहासिक रूप से नारीवादी मुद्दों का विश्लेषण करें तो इनकी मुख्य मांग है की समाज में स्त्री पुरुष के मध्य समानता स्थापित की जाए तथा स्त्रियों के अधिकार को मानव अधिकारां की श्रेणी के रूप में मान्यता दी जाए। एक राजनीतिक अवधारणा के रूप में नारीवाद बीसवीं शताब्दी में स्थापित हुआ। प्राचीन या मध्यकाल में स्त्रियों के प्रति होने वाले अत्याचार के विरुद्ध महिलाओं

द्वारा किसी आंदोलन के स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिलते हैं। महिला आंदोलन नारीवाद के सैद्धांतिक पक्ष को व्यवहारिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। संगठित रूप से नारीवादी आंदोलन की शुरुआत फ्रांसीसी क्रांति के दौरान देखने को मिलती है जब स्त्रियों ने सभी राजनीतिक एवं सार्वजनिक कार्यक्रमों में खुल कर हिस्सा लिया जिसके परिणाम स्वरूप स्त्रियों के लिए कानून में कई अहम बदलाव किए गए। जैसे 1791 के कानून में स्त्री शिक्षा का प्रावधान शामिल करना, 1792 में स्त्रियों को नागरिक अधिकार प्रदान करना तथा 1794 में कानून द्वारा तलाक की प्रक्रिया को सरल बनाना। अमेरिका में स्त्रियों के अधिकारों के आंदोलन की शुरुआत 1840 के दशक में मानी जाती है जब एक लोकप्रिय सेनेका फॉल्स कन्वेंशन हुआ। इसके साथ ही विकसित देशों में स्त्रियों के लिए मताधिकार की मांग उठने लगी। 1869 में अमेरिका में स्त्रियों को वोट देने के अधिकार के लिए एक राष्ट्रीय एसोसिएशन बनाया गया। इस तरह के संगठनों का विस्तार धीरे–धीर यूरोप में भी होने लगा। इस संदर्भ में पहली सफलता 1893 में न्यूजीलैंड में मिली। इसी कड़ी में अमेरिका में 1920 में स्त्रियों को मतदान करने का अवसर प्राप्त हुआ। 1970 के दशक से ही नारीवाद ने अपने आप को एक विचारधारा के रूप में स्थापित करने का प्रयास आरंभ कर दिया और 1990 के दशक में यह पूर्ण रूप से विचारधारा के रूप में स्थापित हो गई। पहली बार नारीवाद के विचार को न्यूयॉर्क रेड स्टॉकिंग्स घोषणा पत्र 1969 के द्वारा सशक्त रूप से अभिव्यक्ति प्रदान हुई जिसमें स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया कि स्त्रियां एक पीड़ित वर्ग हैं। स्त्रियों का उत्पीड़न सर्वव्यापक है जो स्त्रियों के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। समय के साथ नारीवादी नामक विचारधारा ने खुद को और अधिक सशक्त बनाया जैसे कि 21वीं शताब्दी के आरंभ में इस विचारधारा में कई प्रभावशाली परिवर्तन हुए। वर्तमान में नारीवाद एक बहुआयामी विचारधारा के रूप में उभरी है जिसने न केवल अकादमिक जगत में बल्कि व्यवहारिक रुप से भी सामाजिक परिवर्तन के कई अहम कार्य को अंजाम दिया है।

भारत में नारीवाद

पुरुषों का नियंत्रण तथा पुरुष वर्चस्व हर समाज की कड़वी सच्चाई है और भारतीय समाज भी इससे अछूता नहीं रहा है। आरंभिक समय से ही भारतीय समाज के लगभग हर क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति दयनीय रही है। समाज की आधी आबादी का हिस्सा होने के बावजूद महिलाओं को हमेशा मूलभूत अधिकारों तथा सुविधाओं से वंचित रखा गया। भारत में भी नारीवाद समय–समय पर सत्ता के विरोध में अपनी आवाज बुलंद करता रहा है तथा महिलाओं के समान अधिकारों की लड़ाई से जुड़ा रहा है। यदि हम भारत के संदर्भ में नारीवादी आंदोलन का अवलोकन करें तो हम इसको तीन कालखंडों में बांट सकते हैं–

प्रथम चरण 1850—1915

भारत में नारीवादी आंदोलन का प्रथम चरण 19वीं शताब्दी में देखने को मिलता है। इस समय अवधि में नारीवाद आंदोलन सामाजिक सुधार आंदोलन और राष्ट्रीय आंदोलनों से जुड़ा रहा है। भारत का नारीवादी आंदोलन कई आयामों में पश्चिम के नारीवादी आंदोलन से अलग रहा है जिसका म्ख्य कारण है भारतीय सामाजिक संरचना, उपनिवेशवाद और उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष। भारत में प्रथम नारीवादी आंदोलन भारतीय समाज में विद्यमान रूढ़ीवादी परंपराओं व अंधविश्वासों जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा आदि को समाप्त करने के उद्देश्य पर केंद्रित रहा। इस कालखंड में हम स्त्रियों के अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाले समाज सुधारकों की अगर बात करें तो उसमें राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद, सावित्रीबाई फुले, ताराबाई शिंदे, ज्योतिबा फूले, पंडिता रमाबाई, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सयद अहमद खान आदि विचारकों का नाम सामने आता है। इन समाज सुधारक ने महिलाओं से जुड़े हुए मुद्दों को प्रमुखता दी तथा कानूनी सुधार व विभिन्न संगठनों के माध्यम से स्त्री अधिकार जैसे स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह आदि के क्षेत्र में अथक प्रयास किए।

द्वितीय चरण 1915—1947

भारत में नारीवाद आंदोलन का दूसरा चरण महिलाओं की सामाजिक आंदोलनों तथा क्रियाकलापों में सक्रिय भागीदारी से जुड़ा हुआ है। इस कालखंड में महिलाओं द्वारा विभिन्न सामाजिक संगठन व आंदोलनों में खुलकर भागीदारी ली गई महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर श्रमिक आंदोलनों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस चरण में महिलाओं के अधिकार की दिशा में विभिन्न कार्य हुए जैसे भारतीय महिला संघ की स्थापना हुई और शारदा एक्ट 1929 जैसे कानूनी सुधार किए गए। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी और डॉक्टर अंबेडकर द्वारा महिला उत्थान की दिशा में किए गए प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है जैसे महात्मा गांधी ने विभिन्न सामाजिक प्रथाओं सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, छुआछूत विधवाओं का शोषण खुलकर विरोध किया। वहीं दूसरी ओर डॉ भीमराव अंबेडकर ने संवैधानिक प्रावधानों तथा कानूनी सुधार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की दिशा में भरसक प्रयास किए। इस कालखंड में प्रमुख नारीवादी विचारकों में शामिल कामिनी राय, सरला देवी चौधुरानी, दुर्गाबाई देशमुख।

तृतीय चरण 1947 से वर्तमान तक

भारत में नारीवादी आंदालन का तीसरा चरण स्वतंत्रता के बाद से प्रारंभ हुआ। इस चरण में नारी वादियों का कार्य सार्वजनिक और निजी जीवन में समानता को स्थापित करने से संबंधित है। यह

प्रमुख रूप से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समानता, शिक्षा तक पहुंच, संपत्ति में अधिकार तथा लैंगिक विभेद के अंत से जुड़ा हुआ है। वर्तमान काल में भारतीय नारीवादी विचारक और आंदोलन की सूची में मुख्यतः शामिल है मेधा पाटेकर, गीता सहगल, वंदना शिवा, निवेदिता ममेनन, मेघना पंत, वृंदा करात, नीरा देसाई।

समकालीन भारत में महिला आंदोलन

समकालीन भारत में महिला आंदोलन सबसे अधिक तेजी से बढ़ने वाला सामाजिक आंदोलन है। इसके परिणाम स्वरूप ही नारी शक्ति और महिला सशक्तिकरण की विचारधारा को बढ़ावा मिलता है। यदि हम समकालीन भारत में महिला आंदोलनों का अवलोकन करें तो कुछ प्रमुख विशेषताएं उभर कर आती हैं। वर्तमान समय में महिला आंदोलनों का उद्देश्य केवल सार्वजनिक क्षेत्र में महिला अधिकारों की सुरक्षा करना नहीं है बल्कि परिवार में भी महिलाओं की स्थिति मजबूत करने पर जोर दिया जा रहा है। महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए आरक्षण की मांग विभिन्न संगठनों द्वारा समय–समय पर की जाती है। इसके लिए स्वयं महिलाएं आरक्षण की मांग कर रहे हैं परंतु कुछ राजनीतिक कारणों की वजह से यह कानून पास नहीं हो पाया है। इसके अलावा विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिए सुविधाएं बढ़ाने का प्रयास भी किया जा रहा है। महिला संगठनों का मानना है कि उनकी स्थिति में सुधार के लिए आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अति आवश्यक है, इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए आर्थिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

आजादी के बाद महिलाओं ने विभिन्न सामाजिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे उन्हें एक नई पहचान मिली तथा उनकी शक्ति को देशभर में ही नहीं बल्कि विश्व में पहचाना गया। स्वतंत्रता के बाद अगर हम प्रमुख महिला आंदोलनों की बात करें तो उन में मुख्यतः शामिल हैं।

चिपको आंदोलन जिसमें पेड़ों की कटाई रोकने के लिए पहाड़ी महिलाओं ने एकजुट होकर सरकार के विरोध अहिंसा का पालन करते हुए आंदोलन किया तथा अपने उद्देश्य में सफलता भी प्राप्त की। दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश की महिलाओं ने ताड़ी विरोधी आंदोलन शुरू किया जो 1980 और 1990 के दशक तक चलता रहा। हालांकि इसमें कोई खास सफलता हासिल ना हो सकी परंतु महिलाओं द्वारा चलाया गया यह आंदोलन उनको एक खास पहचान दिलाने में सफल रहा। 1980 के दशक में दहेज और यौन उत्पीड़न के खिलाफ महिला आंदोलनों ने आवाज उठाई और इसमें कई सफलताएं भी हासिल कर पाने में कामयाब हुए। जैसे 1986 में आईपीसी की धारा द्वारा दहेज विरोधी अधिनियम 498–। पास किया गया जिसके तहत दहेज के लिए महिलाओं का शोषण

करने के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। घरेलू हिंसा अधिनियम 2007 के अनुसार घरों में महिलाओं के साथ हिंसा, मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न नहीं किया जा सकता।

महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए अभी भी महिला आंदोलनों को बहुत अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए मुख्य रूप से देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए तथा महिलाआं की स्थिति में सुधार लाने के लिए शिक्षा तक उनकी पहुंच तथा आरक्षण को भी सुनिश्चित किया जाए। महिलाओं को समाज में सम्मान दिलाने के लिए यह भी आवश्यक है की धार्मिक कारको जैसे रूढ़िवादी सोच तथा पुराने रीति–रिवाजों में परिवर्तन किए जाएं। भारत में महिलाओं को समान दर्जा देने के लिए यह आवश्यक है कि महिला कानून तथा महिला अधिकारों को बड़े पैमाने पर प्रचारित व प्रसारित किया जाए।

चुनौतियां

नारीवादी विचारकों के समक्ष विभिन्न प्रकार के चुनौतियां हैं जिसका मुख्य कारण है प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति। क्योंकि प्रत्येक समाज की संस्कृति अलग है इसलिए महिलाओं के साथ होने वाले शोषण के कारण और सरचनाएं भी अलग–अलग हैं। भारत में नारीवादी आंदोलन के समक्ष सबसे मुख्य चुनौती है स्त्रियों के प्रति बनाई रूढ़िवादी अवधारणा एवं पूर्वाग्रह। सार्वजनिक व निजी जीवन में स्त्रियो के प्रति छोटी मानसिकता का निर्माण हजारों वर्षों का परिणाम है। भरसक प्रयासों के बावजूद भी लैंगिक भेदभाव सार्वजनिक जीवन की एक कड़वी सच्चाई है। नारीवादी आंदोलन के लिए प्रमुख चुनौती स्त्रियों के शोषण की समाप्ति के विचार को लेकर नारीवादी विचारकों के मध्य असहमति भी है। हालांकि नारीवादी विचारक अपने उद्देश्यरू पितृसत्तात्मक समाज को समाप्त करने में एक है परंतु नारीवाद के अंतर्गत इसके तरीके पर सहमति नहीं है। यही कारण है कि नारीवादी आंदोलन की गति धीमी रही है।

संभावनाएं

नारीवादी विचारकों का मानना है कि वर्तमान युग में शिक्षा के विस्तार के साथ यह स्पष्ट हो चुका है कि स्त्री पुरुष की शारीरिक मानसिक तथा उत्तरदायित्व से जुड़ी योग्यताओं में कोई अंतर नहीं है। जिस भी क्षेत्र में स्त्रियों को अवसर मिला है वहां उन्होंने अपने आप को साबित किया है फिर चाहे वह शारीरिक क्षमता से जुड़े क्षेत्र ही क्यों ना हो। जैसे खेलकूद तथा सेना के क्षेत्रों में भी स्त्रियों ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्रियों को अशक्त या अबला के रूप में देखा जाना तर्कसंगत नहीं है तथा स्त्रियों का निम्न स्तर प्राकृतिक व्यवस्था की नहीं बल्कि सामाजिक व्यवस्था की देन है। अगर हम नारीवादी आंदोलनों के प्रभाव की बात करें

तो सभी प्रकार के समाजों पर नारीवादी आंदोलनों का प्रभाव पड़ा है जैसे नारीवादी प्रयासों के परिणाम स्वरूप स्त्रियों की दशा में काफी सुधार हुए फिर चाहे वह मताधिकार हो, शिक्षा का अधिकार, निजता का अधिकार, विवाह एवं तलाक के कानूनों में परिवर्तन या दहेज एवं बाल विवाह पर प्रतिबंध जैसे विभिन्न कानूनों में परिवर्तन की बात हो। पिछले दशकों में हर समाज में महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है तथा महिला अधिकारों की दशा में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में भी विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में प्रयास जारी हैं जिसके सकारात्मक परिणाम हासिल हुए हैं तथा आगे भी होने की संभावनाएं हैं। नारीवादी आंदोलन के प्रयासों की सफलता का आकलन हम इस बात से ही लगा सकते हैं कि आज नारीवादी विचारको का उद्देश्य स्त्रियों को पुरुष के समान बनाना नहीं बल्कि उनके मध्य प्राकृतिक अंतर को स्वीकार करते हुए उनकी सामर्थ्य का संपूर्ण उपभोग कर सामाजिक असमानताओं को दूर करना है। क्योंकि किसी भी समाज का संपूर्ण विकास तभी संभव है जब स्त्री पुरुष के मध्य समान संबंध स्थापित हो।

♦♦♦♦♦

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281